माइंस एसोसिएशन द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का भाषण

बूंदी से राजस्थान विधान सभा के माननीय सदस्य, श्री अशोक डोगरा जी;
श्री शंभू सिंह सोलंकी जी;
श्री अशोक जैन जी;
देवियो और सज्जनो:

डाबी, बूंदी में आयोजित इस विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेकर और इस विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। सबसे पहले, मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए मैं श्री अशोक डोगरा जी और माइंस एसोसिएशन बूंदी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

बूंदी अपने महलों, किलों, बावड़ियों और नक्काशीदार स्तंभों वाली छतरियों के लिए प्रसिद्ध है। भित्ति चित्रों से सजे महल, किले और स्मारक इस शहर के समृद्ध इतिहास का प्रमाण हैं।

बूंदी को बहादुरी और बलिदान की गाथाओं से भरे अपने समृद्ध इतिहास पर गर्व है। राजस्थान के हृदय में बसा बूंदी ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह अपने मनमोहक परिदृश्यों के लिए प्रसिद्ध है तथा खनन क्षेत्र में भी इसका एक विशिष्ट स्थान है।

माइंस एसोसिएशन बूंदी ने पर्यावरण अनुकूल खनन कार्यों को बढ़ावा देकर सराहनीय कार्य किया है। एसोसिएशन ने इस क्षेत्र के खनन परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एसोसिएशन ने दिशानिर्देशों

और विनियमों का कड़ाई से पालन करने के लिए अटूट प्रतिबद्धता दर्शाई है जोकि अन्य खनन संस्थाओं के लिए अनुकरणीय है।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि माइंस एसोसिएशन बूंदी उच्चतम सुरक्षा मानकों का पालन करती है। एसोसिएशन अपने कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए खनिकों को विस्तृत स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान करने, कड़े सुरक्षा प्रोटोकॉल को लागू करते हुए अपने कर्मियों के लिए एक सुरक्षित कार्य-परिवेश तैयार करने के लिए प्रयासरत है। यह उल्लेखनीय है कि माइन्स एसोसिएशन न केवल खनन संबंधी कार्यकलापों पर ध्यान केंद्रित करती है बल्कि यह स्थानीय समुदायों के साथ मज़बूत संबंध स्थापित करने पर भी समान रूप से बल देती है।

खनन क्षेत्रों के आस- पास रहने वाले समुदायों के साथ साझेदारी करके माइन्स एसोसिएशन वहां के निवासियों का सामाजिक-आर्थिक कल्याण सुनिश्चित कर रहा है। यह सर्वविदित है कि संसाधनों के दोहन के लिए खनन संबंधी कार्यकलाप अनिवार्य हैं किंतु इनके कारण पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान भी पहुंचता है, जो चिंता का विषय है।

खनन क्षेत्रों में वृक्षारोपण करने से न केवल खनन संबंधी कार्यकलापों के प्रभावों को कम करने में मदद मिलती है, बल्कि इससे वहां का पारिस्थितिकी तंत्र भी स्वस्थ होता है। इस प्रकार, वृक्षारोपण स्थानीय समुदायों के कल्याण और हमारी धरती को हरा-भरा बनाने की दिशा में सकारात्मक योगदान देता है।

आज हम वृक्षारोपण के इस विशेष कार्यक्रम के अवसर पर यहाँ एकत्र हुए हैं। मुझे बताया गया है कि इस वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत एक अमृत वाटिका के निर्माण हेतु 75 प्रकार के वृक्ष लगाए जाएंगे।

यह एक सुंदर संयोग है कि यह कार्यक्रम अमृतकाल के दौरान आयोजित किया जा रहा है। अमृत काल के माध्यम से हमारी सरकार ने आगामी 25 वर्षों के लिए देश की प्रगति और विकास हेतु एक व्यापक रूपरेखा तैयार की है। कुल मिलाकर, इसका उद्देश्य समावेशी कल्याण के माध्यम से नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाना है।

वृक्षों को पृथ्वी के फेफड़े कहा जाता है, क्योंकि वे हमारे पर्यावरण के नाज़ुक संतुलन को बनाए रखने के लिए जरूरी भूमिका निभाते हैं।

वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, अनेक प्रजातियों के लिए आवास उपलब्ध कराते हैं, भूमि के कटाव को रोकते हैं और हमारे पर्यावरण की सामान्य स्थिति को बनाए रखने एवं इसे और बेहतर बनाने में योगदान देते हैं। आज, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण को हो रहे नुकसान को देखते हुए वृक्ष लगाना अत्यंत आवश्यक है।

हम सभी जानते हैं कि भारत एक धार्मिक विविधताओं वाला देश है, जहाँ लगभग 33 करोड़ देवी-देवताओं की पूरे साल भर विभिन्न पारंपरिक तौर-तरीकों से पूजा की जाती है। भारतीय संस्कारों और त्योहारों में पेड़ों और उनके उत्पादों का उपयोग किया जाता है, और अलग-अलग देवी-देवताओं का विशिष्ट पेड़ों से संबंध है।

भारतीय परंपरा में यह माना जाता है कि पेड़ों में भी मनुष्यों के ही समान चेतना होती है, इसलिए उन्हें भी सुख और दुःख की अनुभूति होती है।

हर साल एक विशेष समय पर पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं और फिर समय आने पर नई कोपलें फूट आती हैं, इसीलिए मनुष्यों ने अक्सर वृक्षों की भी जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के प्रतीक के रूप में कल्पना की है।

पीपल का वृक्ष भारत में बहुत ही पूजनीय माना जाता है। बौद्ध धर्म में इसका विशेष स्थान है। बोधगया के बोधि वृक्ष का यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि गौतम बुद्ध को इसकी शाखाओं के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। हिंदू धर्म में, पीपल के पेड़ की जड़ों को भगवान ब्रह्मा के साथ, पत्तों को भगवान शिव के साथ और तने को भगवान विष्णु के साथ जोड़ा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद गीता में कहा है "अश्वत्थ: सर्ववृक्षाणां" अर्थात् समस्त वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ।

यह हमारी संस्कृति में पेड़ों के महत्व को दर्शाता है। पेड़ों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मत्स्य पुराण में कहा गया है:

दस कूप समा वापी,दस वापी समो ह्रद:।
दस ह्रद समो: पुत्रो, दस पुत्र समो द्रुम:।।

अर्थात्

(10 कुओं के बराबर एक बावड़ी, 10 बावड़ी के बराबर एक तालाब,
10 तालाब के बराबर एक पुत्र और 10 पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।)

वृक्षारोपण कर हम अपनी भावी पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित कर रहे हैं। हम केवल इन पौधों के बीज ही जमीन में नहीं डालते हैं; अपितु हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा, जीविका और एक स्वस्थ दुनिया के

बीज बो रहे होते हैं। आज हमारे द्वारा उगाया गया हर एक पौधा हमें जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचाता है और हमारी अनेक जरूरतें पूरी करता है।

वृक्षारोपण केवल एक प्रतीकात्मक भाव नहीं है। यह इस बात का भी सूचक है कि हमें इस पृथ्वी की रक्षा करनी है इसकी विविधता और सुंदरता को बचाने की जिम्मेदारी हम पर है । प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी भी उम्र, पृष्ठभूमि या पेशे से संबंध रखता हो, इस महान कार्य में भाग लेना चाहिए। चाहे हमारे पड़ोस में वृक्षारोपण करना हो, पुनर्वनीकरण कार्यक्रम में भाग लेना हो या पर्यावरण संरक्षण हेतु समर्पित संगठन को समर्थन देना हो।

मेरा विश्वास है कि माइन्स एसोसिएशन ऑफ बूंदी का यह प्रयास केवल शुरुआत है जो लोगों को वृक्षारोपण और बूंदी को हरा-भरा बनाने के लिए प्रेरित करेगा। आपका यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि खनन और पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी एक साथ पूरी की जा सकती है। नैतिक आचरण, सामुदायिक कल्याण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति आपकी प्रतिबद्धता न केवल इस क्षेत्र में बल्कि इसके बाहर भी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं आप सभी को इस विशेष कार्यक्रम में भाग लेने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। यह अमृत वाटिका न केवल हमारी आजादी के 75 वर्ष के प्रतीक के रूप में कार्य करेगी बल्कि हमारी भावी पीढ़ी को भी प्रेरित करेगी। आज यहां आपकी उपस्थिति से इस उद्देश्य के प्रति आपका समर्पण और पर्यावरण के प्रति आपका प्रेम दोनों प्रदर्शित हो रहे हैं। मैं तहे दिल से यह चाहता हूं कि आप सभी इस वृक्षारोपण अभियान को ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ाने का हरसंभव प्रयास करें। परिवर्तन के इस बीज को बोकर,

हम एक हरित, स्वस्थ और अधिक सस्टेनेबल विश्व का निर्माण कर सकते हैं। आइए, हम सभी एक साथ मिलकर इस वृक्षारोपण कार्य के माध्यम से जीवन, सौंदर्य और आशा की विरासत को आगे ले जाने का प्रयास करें। मैं आप सभी के भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं।

———